जीवन है पानी की बूँद

(रचयिता-आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज)

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे-ऽऽ
होनी-अनहोनी, हो-हो-2 कब क्या घट जाए रे-ऽऽ

साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा-लेटा
हाय बुढ़ापा आएगा, पास न आएगा बेटा
ख्वाबों में तू क्यों, हो-हो-2 आनन्द मनाये रे-ऽऽ

अर्द्धमृतक समवृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न-सिकुड़न
गोदी में पोता-पोती, खोज रहा बचपन यौवन
बीते जीवन के, हो-हो-2 तू गीत सुनाये रे-ऽऽ

हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी
बेटा बहु सोचें, हो-हो-2 डोकरो कब मर जाये रे-ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी-बेटा है
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है
भूखा प्यासा ही, हो-हो-2 इक दिन मर जाये रे-ऽऽ

जीवन बीता अरहट में, पुण्य-पाप की करवट में
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में
तेरा ही बेटा, हो-हो-2 तेरा कफन सजाये रे-ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है
तेरा ही बेटा, हो-हो-2 तुझे आग लगाये रे-ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गँवाता है
देहरी से बाहर, हो-हो-2 वो साथ न जाये रे-ऽऽ